लोकतांत्रिक व्यवस्था के सजग प्रहरी : डॉ0राममनोहर लोहिया

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

निजी जीवन में अन्यायपूर्ण हस्तक्षेप के विरुद्ध लोकतांत्रिक उपाय भी आचार–संहिता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। डा0 लोहिया समझते थे कि मानव एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसकी निजी इच्छायें और आकांक्षाएं हैं। वह थोपी हुई व्यवस्था में अपने आपको सुखी महसूस नहीं करेगा। डा0 लोहिया मनुष्य को निजी स्तर पर इतना स्वतंत्र बनाना चाहते थे कि वह अपनी वृद्धि, विवेक और आस्था से जैसा चाहे वैसा जीवन यापन करे। उन्होंने स्वयं कहा कि ''हर व्यक्ति को अपने जीवन को अपने मन के मुताबिक चलाने का अधिकार है। ... जीवन के कुछ ऐसे दायरे होने चाहिए जिसमें राज्य का या सरकार का, संगठन का या गिरोह का दखल न हो। जिस तरह हमारे जमीन की बेदखलियां हो जाती हैं उसी तरह सरकार और राजनीतिक पार्टियां हमारे जीवन को भी बेदखल कर डालती हैं।'' चूंकि डॉ0 लोहिया व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के किये जा रहे शोषण को सर्वाधिक घृणित मानते थे इसलिए आदमी द्वारा चलाए जाने वाले रिक्शे की सवारी वे कभी नहीं करते थे। वे मनुष्य की आध्यात्मिक स्वतंत्रता के भी पक्षधर थे क्योंकि व्यक्ति की निष्ठा का निर्माण आध्यात्मिक स्वतंत्रता से ही होता है। कहने का तात्पर्य यह कि मनुष्य को यदि सारी सुख–सुविधाएं मुहैया करा दी जायं और उसके अन्तर्मन की स्वतन्त्रता पर रोक लगा दी जाय तो उन सारी सुविधाओं का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को इस बात की पूरी आजादी होनी चाहिए कि वह अपने मन की दुनियां में आजाद होकर घूम सके। डॉ0 लोहिया का यह सिद्धान्त रवीन्द्रनाथ के 'एकला चलो' के सिद्धान्त से मिलता–जुलता है। इन बातों का प्रतिफलन अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर साफ देखा जा सकता है। पूर्व सोवियत रूस और समूचे पूर्वी यूरोप से साम्यवादी व्यवस्थाओं का ध्वस्थ हो जाना इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं कि मानव मन पर जुल्म करके या दबा करके खड़ी की गयी व्यवथाओं का क्या परिणाम होता है। देश स्तर पर लोहिया की बातें मान ली जायं तो पंजाब, कश्मीर और असम की समस्याओं का समाधान अवश्य निकल आयेंगा। क्योंकि इन राज्यों की समस्याओं के मूल में भी उनके अधिकारों का हनन ही है।

डा0 लोहिया का हृदय किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा में न होकर ,निरन्तर परम्परा, यथास्थितिवाद व शोषण के द्वार पर दस्तक देने के लिए आतुर रहता था। आजीवन सादगी भरा जीवन, निश्चिन्तता एवं मस्ती, अन्याय के विरूद्ध संघर्ष, गलत नीतियों का विरोध, अविवाहित जीवन आदि आपके व्यक्तित्व के अभिन्न गुण थे। जीवन को सुसंस्कृत एवं गौरवमय बनाने के लिए डॉ0 लोहिया जी ने उन मौलिक अधिकारों का अनुमोदन किया जो लोकतांत्रिक समाजवादी जीवन के जरूरी अंग हैं। वह जीवन भर इन अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे। लोहिया जी कहा करते थे कि मैं तो उस परम्परा की कड़ी हूँ जो प्रहलाद से शुरू होकर सुकरात होते हुये गांधी तक पहुंची है । मैं चाहता हूँ कि मनुष्य हथियारों या ताकत का प्रयोग किये बिना अन्याय एवं शोषण का विरोध करने की

कला सीखे । डा0 लोहिया ने अपने समाजवादी विचारों में अन्न एवं भू–सेना की कल्पना की थी । अन्न और भू–सेना के बारे में डॉ0 लोहिया ने कहा था कि जैसे बन्दूक वाली सेना वैसे ही हल वाली सेना । डा0 लोहिया का नारा था कि 'धन और धरती बंटकर रहेगी – भूखी जनता अब न रहेगी' । डा0 लोहिया का कहना था कि जितना धन खाद्य सामग्री के आयात पर खर्च किया जाता है उसे भू–सेना पर खर्च किया जाना चाहिये। डा0 लोहिया की योजना थी कि भारतीय कृषि व्यवस्था को सुदृढ करने के लिए दस लाख व्यक्तियों की भू–सेना का निर्माण किया जाना चाहिये । इस अन्न सेना के द्वारा 15 करोड़ एकड़ परती जमीन में से प्रतिवर्ष एक करोड़ एकड़ भूमि को कृषि योग्य बनाया जा सकता है । डॉ0 लोहिया जी दूसरे समाजवादी विचारकों के समान आर्थिक विषमताओं को अधिक महत्व प्रदान करते हैं । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि डॉ0 लोहिया जी ने सामाजिक समस्याओं जिनमें मुख्य रूप से जाति प्रथा की समस्या है का तीव्र विरोध किया क्योंकि भारत में जितनी भी सामाजिक समस्याएँ मौजूद हैं उन सबका उदभव जाति प्रथा का परिणाम है । जब तक हमारे समाज में जातिगत असमानतायें पूरी तरीके से समाप्त नहीं हो जाती। तब तक समाजवाद की स्थापना संभव नहीं क्योंकि सामाजिक और आर्थिक समता की स्थापना ही समाजवाद का प्रधान लक्ष्य होता है ।

इतिहास में जाति वर्गों का संघर्ष दिखाई पड़ता है। वर्ग व जाति के बीच यह आन्तरिक संघर्ष (हलचल) ही इतिहास में गतिशीलता प्रदान करती है। जातियों का स्वरूप सुनिश्चित होता है। जब कि वर्गों की आन्तरिक रचना शिथिल होती है। जातियों में प्रायः गतिहीनता व निष्क्रियता पायी जाती है। जबकि वर्ग सामाजिक गतिशीलता की तीव्र शक्तियों के प्रतिनिधि होते हैं। जातियाँ शिथिल होकर वर्गों में विभाजित हो गई और वर्ग संगठित होकर जातियों का रूप धारण कर लिया। डॉ0 लोहिया जी ने जाति प्रथा के ऊपर जितना तीखा प्रहार किया शायद ही किसी और विचारक ने किया हो । डा0 लोहिया का मानना था कि गरीबी और जाति प्रथा एक दूसरे के कीटाणुओं पर पनपती हैं क्योंकि जब तक जाति प्रथा को समाप्त नहीं किया जा सकता तब तक संस्कृति, दर्शन साहित्य, भाषा, इतिहास आदि सब अधूरे हैं। समाजवादी आंदोलन का आरम्भ यूरोप से माना जाता है, किन्तु उसका देशी भारतीय संस्करण डॉ0 लोहिया ने बनाया। जाति–प्रथा के दो कैदखाने नष्ट करने का आवाहन करते हुये लोहिया ने कहा कि इन कठघरों में इतनी ताकत है, कि ये जोखिम उठाने और खुशी हासिल करने की सारी ताकत को खत्म कर देते हैं। गरीबी और ये कठघरे एक–दूसरे के पैदा हुए कीड़ों पर चलते हैं। गरीबी के खिलाफ लड़ने की सारी कोशिशें झूठी हैं, अगर साथ ही साथ इन दो कठघरों के खिलाफ भी लगातार सचेत होकर नहीं लड़ती। लोहिया की भारतीय सामाजिक संरचना की गहरी समझ के चलते यह संभव हुआ , अन्यथा जिस तरह मार्क्सवादी चिंतकों ने मार्क्सवाद के रूसी संस्करण को भारत पर लागू किया और दुनिया का महान वैज्ञानिक मानवीय चिंतन भारत में असफल हुआ वही हाल समाजवाद का भी होता। यह सत्य है कि लोहिया की समाज की परिकल्पना से आज के समाजवाद या समाजवादियों का कोई रिष्ता दिखाई नहीं देता, परन्तु यह बात भी उतनी ही सत्य है, कि समाजवाद आज भी किसी न किसी रूप में प्रासंगिक बना हुआ है। यह डॉ0 लोहिया जी ही थे जिन्होने वर्षों पुरानी दासता को सामाजिक विषमताओं की उपज बताया । डॉ0 लोहिया जी की सामाजिक साधना ने राष्ट्रीय जीवन के मस्तिष्क और आत्मा का विकास किया है । राष्ट्रीय जीवन के उत्थान के लिए डॉ0 लोहिया जी ने सामप्रदायिकता, जाति प्रथा, नर–नारी असमानता, अस्पृश्यता रंग भेद, इसी प्रकार की

सामाजिक कुरीतियों पर गहरा प्रहार किया । डॉ0 लोहिया का कहना था कि भारतीय समाज को जब तक सामाजिक समानता प्राप्त नहीं होती तब तक आर्थिक समानता का कोई अर्थ नहीं । देश में व्याप्त आय–विषमता, मूल्य वृद्धि, भ्रष्टाचार, धर्म व्यवस्था, जमींदारी और विलासिता को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे । डॉ0 लोहिया जी ने गरीबों, किसानों और शोषितों को उनकी भाषा देकर उनमें आत्म–स्वालम्बन, राजनैतिक जागरण और आजादी के बीज बोये । वास्तव में डॉ0 लोहिया जी युगदृष्टा थे उनके अनुसार वही व्यक्ति समाज को सही दिशा दे सकता है जिसको अपने अतीत की अनुभूति हो । वर्तमान का ज्ञान हो और अपने भविष्य का सपना हो । डॉ0 लोहिया का मानना था कि अन्याय के सामने झुक जाना अन्याय को बढ़ाना है, इसलिए व्यक्ति को अन्याय का मुकाबला डटकर करना चाहिये । डॉ0 लोहिया की विचारधारा देशकाल की परिधि में कभी बंधकर नहीं रही । एक स्थान विशेष की राजनीति को डॉ0 लोहिया हमेशा सम्पूर्ण विश्व की राजनीति से जोड़ते थे । डॉ0 लोहिया जी के दर्शन से स्पष्ट होता है कि उसमें सन्तुलन और सम्मिलन का समावेश है । डॉ0 लोहिया ने अपनी संस्कृति को एकता और समता का मूल बतलाया । वास्तव में इस बात में तनिक भी संदेह नहीं हैं कि डॉ0 लोहिया जी के लड़ाकू समाजवादी आंदोलन ने जनमानस पर गहरा प्रभाव डाला ।

डा0 लोहिया ने एक अन्य हकीकत को बयान करते हुए कहा था कि आज देश में तीन का ही आदर है : 1. सरकार, सम्मानित नेता और मंत्री ; 2. बड़े सरकारी अफसर और 3. करोड़पति। बाकी जनता का तो कचहरियों, सरकारी दफ्तरों आदि स्थानों में हर जगह निरादर होता है। जुल्म को सह लेना ज्यादा खराब है बनिस्वत गुस्सा करने के। ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान के असली नागरिक बाहर हटा दिये गये हैं और कमरे के भीतर बेईमान, विदेशी, जंगली और असभ्य हैं। गौतम बुद्ध ने जरूर अच्छा कहा था : 'अक्रोधेन क्रोधं' लेकिन अन्याय के मुकाबले में ?

डॉ0 लोहिया स्वतंत्रता में अगाध विश्वास रखते थे। डॉ0 लोहिया ने अपने स्वतंत्रता सम्बंधी विचारों को दो भागों में विभाजित किया–वाणी स्वतंत्रता और कर्म नियंत्रण की स्वतंत्रता। उनका मत था कि वाणी स्वतंत्रता बिल्कुल स्वच्छन्द रहे किन्तु कर्म पूर्ण नियन्त्रित। यदि दल का विधान सर्व–सम्मत निर्णय से किसी सदस्य को पसन्द नहीं है तो वाणी के द्वारा उस निर्णय का विरोध करने के लिए वह व्यक्ति स्वतंत्र है किन्तु कर्म में उसका वास्तविक पालन करना उसे अनिवार्य है। राजनैतिक इतिहास में डॉ0 लोहिया का यह सिद्धांत अनूठा है, इसमें वैयक्तिक स्वतंत्रता और सामाजिक हित का सुन्दर समन्वय है। जनमत के स्वस्थ विकास के लिये वाणी की स्वतंत्रता को डॉ0 लोहिया सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा मानते थे। जनमत जितना मुखर होगा सत्य उतना ही पारदर्शी रूप में उभर कर आयेगा, और जनमत को जितना दबाया जायेगा उतना ही सत्य का स्वरूप धूमिल होगा। ''वाक् स्वातंत्रम्, कर्मनियंत्रणम् इति जनतांत्रिक अनुशासनम्'' के माध्यम से अपनी बात की पुष्टि करते हुये वे कहा करते थे कि वाणी की स्वतंत्रता तो पूर्णतः स्वछन्द होनी चाहिये, किन्तु कर्म पर पूर्ण नैतिक नियंत्रण एवं अनुशासन रहना चाहिये। उनके कथनानुसार बोली की तो लम्बी बाँह होनी चाहिये लेकिन कर्म बंधा हुआ, संगठित एवं अनुशासित होना चाहिये। यदि व्यक्ति झूठ भी कह रहा है, तब भी राज्य को बलपूर्वक उसका उन्मूलन अथवा हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। हालांकि वे गाली–गलौज या अपमानजनक स्तर पर वाणी के प्रयोग को अनैतिक और अपराध मानने से भी नहीं हिचकिचाते थे। वाणी स्वतंत्रता के अन्तर्गत वे प्रेस, भाषण, संगठन, तथा निजी जीवन की स्वतंत्रता को शामिल करते थे। वाणी स्वातंत्र के विपरीत कर्म को वे मर्यादित एवं नियंत्रित कहते थे। प्रत्येक व्यक्ति को कर्म संगठित एवं सिद्धान्त

और संविधान के अनुसार ही करना चाहिये। इस प्रकार डॉ0 लोहिया जी ने जहाँ अपनी जनतांत्रिक आस्थाओं के कारण वाणी की स्वतंत्रता का पुरजोर समर्थन किया एवं उसमें राज्य के हस्तक्षेप को जघन्य अपराध करार दिया, वहीं दूसरी ओर कर्म पर नियंत्रण को प्रजातांत्रिक प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग घोषित किया।

डॉ0 लोहिया का मानना था कि एक सच्चा समाजवादी कभी भी सांप्रदायिकता को प्रोत्साहन नहीं दे सकता और न उसे बर्दाश्त कर सकता है। डा0 लोहिया जी जब जन सपना और संघर्ष की बात करते हैं तो इसका सीधा मतलब होता है कि रचना और आंदोलन साथ–साथ चलने चाहिए। सही मायने में रचना से ही आंदोलन को सार्थकता मिलती है और आंदोलन भी रचना के लिए निर्माण के लिए होते हैं। इस समय भारतीय राजनीति में तीन भिन्न दृष्टियों का प्रतिनिधित्व हो रहा था। नेहरू जी का झुकाव इंग्लैण्ड और फ्रांस की तरफ था। वे इन दोनों के साथ कुछ शर्तों के सहयोग के पक्ष में थे। सुभाषचन्द्र बोस की सीधी व्यावहारिक दृष्टि संघर्ष के सम्बंध में थी । गाँधी जी मानवीय दृष्टि से युद्ध में होने वाले संहार के ही विरूद्ध थे। नैतिक सहानुभूति की दृष्टि से शायद उनका झुकाव कुछ थोड़ा–सा अंग्रेजों के पक्ष में था। डा0 लोहिया जी को अपने दृष्टिकोण में गाँधी जी का अधिकाधिक समर्थन मिला।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमार आनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008

- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर – डा0 लोहिया : इतिहास – चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.